दुनिया में ऐसा कोई है नहीं, जिसको ये मालूम हो कि ये ड्रामा है। भले मुख से कहते हैं कि वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी रिपीट होती है। ये कहते हैं ज़रूर; परन्तु कैसे रिपीट होती है वो फिर कोई नहीं जानते हैं। तुम बच्चे जानते हो अच्छी तरह से और वास्तव में यह है एण्ड। इसको कहा जाता है–इण्ड। आदि और अंत, अंत और आदि का संगम। तो जब नाटक पूरा होता है तो बुद्धि ऐसे कहती है कि बरोबर पतित को पावन बनाने वाला (...)। कि इस समय में मनुष्य सभी होते हैं पतित। .....आएँगे तब जब सब एक्टर्स यहाँ हाज़िर होंगे; क्योंकि नाटक जब पूरा होता है तो जो भी एक्टर्स होते हैं, सब आ करके स्टेज पर खड़े रहते हैं। तुम(ने) देखा है कभी नाटक, जीता–जागता नाटक? तो जब नाटक पूरा होता है तो जो भी एक्टर्स, प्रिन्सीपल, मुख्य वगैरह, सब आ करके खड़े हो जाते हैं। तो इस समय में ये बच्चे जानते हैं कि सब यहाँ खड़े हैं। जो भी एक्टर्स, खड़े हैं। तुम बोलेंगे– बाबा, लक्ष्मी–नारायण कहाँ खड़े हैं! नहीं, लक्ष्मी–नारायण भी खड़े हैं; क्योंकि वो भिन्न नाम,रूप,देश,काल पार्ट बजाते–2 अंत के जन्म के पार्ट में ऐसो(ऐसे) भी तो खड़े हैं। शिवबाबा भी तो खड़े हैं; क्योंकि देखो, ब्रह्मा भी तो खड़े हैं। अगर शिवबाबा कहेंगे, ब्रह्मा, ये लक्ष्मी और नारायण, तो वो भी तो यही हैं ना, जो ब्रह्मा–सरस्वती हैं, वही ये हैं; क्योंकि तुम जानते हो कि वो सतयुग में खड़े हैं तो ये संगमयुग पर खड़े हैं। इनका भी ज्ञान तुम बच्चों को है। अच्छा, शिवबाबा भी तो यहाँ है गुप्त वेश में। बाकी कौन नहीं हैं, जो नहीं हैं? तुम बताओ, बाकी कौन हैं, जो नहीं हैं? (किसी ने कहा– शिवबाबा...गुप्त वेश में है) वो भी तो है, ब्रह्मा भी तो है। अच्छा, ये भी तो जानते हो कि ब्रह्मा और सरस्वती तो ही विष्णु है, सो ही लक्ष्मी–नारायण (...)। बाकी कौन–सा ऐसा, कौन–सा एक्टर है प्रोमीनेंट/मुख्य, जो यहाँ है नहीं? (किसी ने कहा– शिव को रखें बाबा, शंकर को रखें) बाकी बचता है शंकर; क्योंकि उनका तो, वो है ही सूक्ष्मवतन में। बाकी सबका पार्ट यहाँ है। देखो, शिवबाबा का भी यहाँ पार्ट है, ब्रह्मा का भी यहाँ पार्ट है, विष्णु का भी यहाँ पार्ट है– ये सृष्टि पर, पृथ्वी पर। कृष्ण का भी पार्ट है। बाकी नहीं पार्ट है इस पृथ्वी पर किसका? सिर्फ एक शंकर का; क्योंकि उनके लिए तो कहते हैं– तो वो विनाश करता है। अभी विनाश करता है, वो तो दुश्मन हो गया सबका; क्योंकि उनके लिए कहते हैं ना कि ये है विनाश कर्ता। तो स्थापना कर्ता तो ठीक है; क्योंकि स्थापना करते हैं स्वर्ग की, वो तो ठीक है। पर ये जो विनाश करते हैं सबका। ये बोलते हैं ऐसा है कि आँख ही खोलें तो सारी सृष्टि खलास हो जाती है। तो अभी कहाँ खोले, सारी सृष्टि जो खलास होवे! क्योंकि सृष्टि तो यहाँ है और ये तो वहाँ है सूक्ष्मवतन में। तो क्या वहाँ ही बैठे–2, आँख ही उनकी तीसरी खुलती है जो सृष्टि विनाश हो जाती है। बाबा गिन रहा है तो इनका पार्ट, ये ऐसा ऊपर में रखा हुआ है। ऐसा नहीं कि गुप्त है, है चित्र। इनका कोई ऐसे प्रोमीनेण्ट (...); क्योंकि विनाश तो होना ही है ज़रूर, तो इसका कोई पार्ट कुछ है नहीं; परन्तु ये तीन जो चले आते हैं तो बाप को समझाना पड़ता है। बाकी नहीं तो वास्तव में विचार किया जाए कि ये है नहीं। ये भला क्या है? ये दिखलाने के त्रिमूर्ति, ये चित्र भी शोभता है। देखो ब्रह्मा, इस तरफ में शंकर, उस तरफ में विष्णु। ऊपर में शिव देखो कितना शोभता है! अगर ये शंकर बाजू में न हो तो शोभे नहीं। अगर शंकर को बाजू में न रख, ये ब्रह्मा के बदली में सरस्वती को वहाँ रख देवें, तो मेरे ध्यान में अच्छा होवे। समझाया; क्योंकि शंकर का कोई दरकार नहीं देखते; पर ड्रामा में है चित्र, समझाना पड़ता है। शंकर (के) लिए कहा जाता है ये विनाश करता है। बाकी नहीं तो वो ब्रह्मा अकेला पड़ जाता है और वो तो है ही प्रत्यक्ष चार भुजा वाला लक्ष्मी और नारायण। बाकी ब्रह्मा और सरस्वती, अभी सरस्वती इसमें नहीं है; क्योंकि विष्णु है तो उसकी, ब्रह्मा की भी सरस्वती होनी चाहिए। इसको जगदम्बा कहते हैं। वास्तव में अभी ड्रामा में तो

दिखलाया हुआ है, उनको चेंज तो कर ही नहीं सकते हैं; क्योंकि शंकर विनाश कर्ता, इसे गाया हुआ है तभी दिया हुआ है। नहीं तो बुद्धि कहती है कि जबकि तुम बच्चे पास होते हैं और विनाश तो सृष्टि का होना ही है, कोई भी हालत में।..जब सतयुग की स्थापना होती है तो कलहयुग का विनाश होना है ज़रूर, अण्डरस्टूड है और ये भी समझाया जाता है कि बरोबर ये नैचुरल कैलेमिटीज़ से होते हैं, फिर इनका शंकर को क्यों रख करके उनके ऊपर दाग दिया है मुफ़्त में? परन्तु ड्रामा में बना हुआ है, इनको चेंज नहीं कर सकते हैं। चेंज करना होता तो कर देते, सरस्वती रख देते वहाँ; परन्तु शंकर की पूजा है, शिव–शंकर इकट्ठा कर दिया है, एकदम इकट्ठे। नहीं तो दरकार नहीं है। कहाँ शिव होता तो मूँझते भी मनुष्य नहीं और यहाँ सरस्वती रख देते सफेद पोश, तो बिल्कुल क्लीयर हो जाता।...समझाया जाता है कि स्थापना होती है, विनाश तो होना ही है। जबकि स्थापना होनी है नई दुनिया की, तो पुरानी दुनिया तो अण्डरस्टुड है कि विनाश होना है। तो देखो, ये बातें कौन बैठ करके करते हैं? खुद मालिक बैठ करके करते हैं कि अगर न भी होता, असुल गाया न जाता होता, तो न भूल होती, इस शिव–शंकर महादेव ये जो मिला देते, तो ये भूल भी निकल जाती और फिर ये ब्रह्मा और सरस्वती भी ठीक देखने में आते, तो भई यही दो विष्णु बनते, यही विष्णु सो तो ये ब्रह्मा–सरस्वती बनते हैं। शंकर की क्या दरकार पड़ी है! इसमें मूँझते हैं और ही कि शिवशंकर, बस मिलाय देते हैं जैसे कि एक ही हैं। बाकी तो सारा ड्रामा तुम बच्चों ने समझाया बिल्कुल ठीक है, एक्यूरेट। समझाना भी बहुत सहज है। सीढ़ी पर भी समझाना अच्छा होता है। वो तो हम दिखलाते हैं कि इनको हम ज्ञानामृत पीते(पिलाते) हैं, ये कुम्भकरण की नींद में सोए पड़े हैं और फिर ये ज्ञान सबके लिए है, कोई भी धर्म वाला हो; क्योंकि बाप देते हैं आत्माओं को ज्ञान, सो आत्माएँ तो सभी हैं ही हैं ब्रदर्स। बच्चे तो बाबा के हैं ही। बाप तो कहते हैं मैं बच्चों को ज्ञान देने आता हूँ। तो वो तो बच्चे तो बच्चे हैं ही हैं और बरोबर सभी बच्चे सद्गति को पाते ही हैं। सद्गति कहो या जीवनमुक्ति कहो। 'जीवनमुक्ति' अक्षर राइट है; क्योंकि जो कोई भी मुक्ति में जाते हैं उनको जीवनमुक्ति में आना है ज़रूर; क्योंकि पहले सबको सुख देखने का है और इन प्रदर्शनी से मनुष्यों को नॉलेज तो बहुत अच्छी मिलती है और कितनी देखो, कितनी महिमा लिखते हैं। सब अच्छा–5 करके गए, प्रजा तो बन गई ना। तो देखो, बहुत साहूकार आते हैं, गरीब भी आते हैं, तो प्रजा तो बहुत बनती जाती है। बाकी जो बोलते हैं हम आ करके समझेंगे, वो आएँगे आगे चल करके, जब बहुत ही समझने लग पड़ेंगे; क्योंकि सभी धर्म के लिए है। अभी जैसे ये है थाइलैण्ड का, ये है बौद्धी धर्म। बौद्धी धर्म है ना। (किसी ने कहा–... जी हाँ) अच्छा, अभी सभी धर्म के लिए है; क्योंकि देह के सभी धर्मों को छोड़ बाप आत्मा को ज्ञान देते हैं। वो देखता नहीं है ये कौन–2 हैं। वो बोलता है हर एक आत्मा को– तुम मामेकम् याद करो तो तुम जो तमोप्रधान बने, सो सतोप्रधान बन जाओ। पीछे सतोप्रधान बनने से तुम फिर जिस–2 धर्म के होंगे, वो तो वापस जाकर उस धर्म में चले जाएँगे; परन्तु यहाँ से सतोप्रधान हो जाने से तुमको पद ऊँचा मिलेगा, नहीं तो सज़ाएँ खाएँगे। तो योग की मेहनत, याद की मेहनत करनी पड़ती है। फिर भले अपने धर्म में ही ऊँच पद मिले, हो सकता है कि जो भी धर्म के नेता हैं, उनको तो आ करके बाप से ये वर्सा भी तो लेना तो है ना, सिर्फ बाप को याद कर। शायद वो बिचारे अंत में आते होंगे ज़रूर। आना तो है उनको भी बाप से मिलने के लिए। ये तो समझ सकते हैं कि जो भी धर्म स्थापक हैं वो इस समय में तमोप्रधान में (हैं)। जैसे ये है नंबर वन। तो ये भी धर्म स्थापक है ना; क्योंकि भले शिवबाबा द्वारा, शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्थापन कर रहे हैं। तो ये भी धर्म स्थापक है। तो जो–2 धर्म स्थापक हैं वो सतो,रजो,तमो में या अभी होगा ही तमोप्रधान में, ऊँच पद में नहीं होंगे। बाकी फिर जो इनको ये मिलना चाहिए ऊँच पद का, तो ज़रूर उनको मिलेगा, जो योग

(...)। बौद्धी धर्म का हेड नहीं बनना चाहता हूँ। बौद्धी धर्म का हेड बनना चाहते हो या देवी–देवता धर्म में पद पाना चाहते हो? (किसी ने कहा– देवी–देवता में) क्योंकि अभी इसमें इनका वारिस बनना पड़े। देखो, फर्क देखो। अभी ये अगर बौद्धी धर्म का है तो बौद्धी धर्म में जाना ही पड़ेगा और अगर है बौद्धी धर्म का, तो बौद्धी धर्म में ऊँच पद जाकर पाएगा, बहुत ऊँच पद जाकर पाएगा। अगर देवी–देवता धर्म का है तो इनको फिर जब ऊँच पद पाएँगे, प्रजा में न जा करके देवी–देवता (...), तो इनको सरेण्डर करना पड़े बिल्कुल ही, कर्मातीत अवस्था में जाना पड़े। कोई भी याद न पड़े इनको, इतनी अवस्था इनकी जमानी पड़े। तो फिर राजाई में आ जाएँगे। नहीं तो फिर प्रजा में चले जाएँगे। सिर्फ बाप को याद करते रहें और सबको ये जा करके बतावें कि बाप को याद करने से तुम सतोप्रधान बन जाएँगे और बहुत ऊँच पद पाएँगे अपने धर्म में, तो वो भी बहुतों का कल्याण कर सकते हैं। अगर ये देवी–देवता धर्म का है, तो फिर इनको सरेण्डर करना पड़े।...तो इनको बौद्धी मान करके फिर ये जो चक्कर का ज्ञान है सारा, ये तो सब तो उठा नहीं सकेंगे, नहीं तो देवी–देवता धर्म में आ जाए। (भारत) की सर्विस में आता है या चले जाते हैं, थाईलैण्ड में जा करके सबको यही कहते हैं कि बाप कहते हैं; क्योंकि किसको भी कह सकते तो हैं ना; क्योंकि ये तो जानते हैं कि बाप यहाँ आते हैं शिवबाबा, शिवजयन्ती यहाँ मनाई जाती है। अभी मैं हो करके आया हुआ हूँ। वो यही कहते हैं कि मन्मनाभव, मुझे याद करो; क्योंकि पूजते शिव को तो सभी हैं। अभी वो आ करके कहते हैं– मुझे याद करो। तो जो तमोप्रधान बन गए हो सो सतोप्रधान बन जाएँगे। तो उस धंधे में लग जाएँगे और फिर अगर इसी(किसी) एक को बैठ करके चक्रवर्ती राजा और सबको बैठ करके समझाएँगे, ये कहाँ तक वहाँ बैठ करके समझाएँगे! कोई बहुत थोड़े निकलेंगे वहाँ, जो ट्रान्सफर हो गए होंगे बौद्धी धर्म में। बाकी इतना हो सकता है कि अगर बौद्धी धर्म का है तो बौद्धी धर्म वालों का बहुतों का कल्याण करेंगे, जो ऊँच पद पाएँगे बौद्धी धर्म में; क्योंकि एक तो बात निश्चय है कि तमोप्रधान आत्मा है, उनको सतोप्रधान बनना है, सो तो बाप कहते हैं– मन्मनाभव, मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म (विनाश) हो जा(ए)। प्योर हो करके तो जाना ही है। या तो सज़ा खा करके जाना है या तो प्योर हो करके जाना है। प्योर होने के लिए तो ये ज्ञान है। जिसको भी देवें वो अच्छा ही ज्ञान है। इसमें तो कोई भी दूसरे धर्म वगैरह की बात नहीं है। इसमें है ही बात एक कि तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। ये दुनिया तमोप्रधान है, इसलिए सब तमोप्रधान ज़रूर हैं। कि कलहयुग है, अंत है, पुरानी दुनिया है। विनाश सामने खड़ा है। तो ये तो ज़रूर है कि पुरानी दुनिया के बाद फिर है नई दुनिया, सतोप्रधान दुनिया। बाकी कोई भी हालत में नॉलेज दे सकते हैं, जो मनुष्य कर्मातीत बन करके फिर या तो इस घराने में आ जावें या तो अपने घराने में चले जावें। यहाँ का होगा तो फिर सारे चक्कर की भी नॉलेज देगा उनको। फिर वो समझाएगा कि कर्मातीत हो करके वो जाएँगे, वो बौद्धी घराने में, जो होगा बौद्धी घराने का, तो वहाँ ऊँच पद जा करके पाएँगे। ऊँच पद तो हर एक बात में है, सभी घरानों में है। बुलाते हैं– लिबरेटर आओ, हे पतित–पावन आओ, हे गाइड आओ! गाइड भी करके बुलाते हैं ना। तो लिबरेटर और गाइड और पतित–पावन, ये तो ज़रूर अक्षर आते ही हैं; क्योंकि पतित–पावन तो ज़रूर है और ये भारत में ही गाते हैं। वो दूसरे भाषाओं में ऐसे नहीं मैं समझता हूँ कि पतित–पावन करके बुलाते होंगे, लिबरेटर करके बुलाते होंगे कि हमको लिबरेट करो इस रावण राज्य से, तमोप्रधान से हमको सतोप्रधान में (...)। तो सतोप्रधान तो मूलवतन भी है, जहाँ शांति–2 है। सबसे बड़े–ते–बड़ी बात है ये– मन्मनाभव। तो बहुत मुक्ति पसन्द करते हैं। जीवनमुक्ति इतनी नहीं पसन्द करते ... मुक्ति पसन्द करते हैं। (म्युज़िक बजा) बच्ची तुम भण्डारे पर हो ना! मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट।